

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 30 न्यायाधीश 19-21 दूसरा परिशिष्ट, बेंजामिनाइट आक्रोश

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 30, न्यायाधीश 19-21, दूसरा परिशिष्ट, बेंजामिनाइट आक्रोश है।

एक बार फिर से नमस्कार, और इस खंड में हम न्यायाधीशों की पुस्तक पर अपनी चर्चा पूरी करने जा रहे हैं।

अध्याय 19 से 21 तक एक अंतिम कहानी है। कहानी के कई पहलू हैं, लेकिन यह मूल रूप से सभी एक हैं, एक तरह की एक चीज़ इसके माध्यम से दूसरे की ओर ले जाती है। इसलिए हमने पूरी किताब में भ्रष्टाचार और धर्मत्याग के पतन के चक्र के बारे में बात की है।

हम इसे यिप्तह और विशेषकर सैमसन में न्यायाधीशों के बीच बढ़ते हुए देख रहे हैं। अध्याय 17 और 18 मीका और उसके लेवी के भ्रष्टाचार और उसके द्वारा किए गए व्यक्तिगत धर्म और उसमें दानियों की भागीदारी को दर्शाते हैं। और अब अध्याय 19 और 21 में, हमारे पास और अधिक नैतिक और आध्यात्मिक भ्रष्टाचार है।

और हम इसके बारे में बिन्यामीन के आक्रोश के संदर्भ में बात कर सकते हैं क्योंकि गिबा में बुरी चीजें होती हैं, जो बिन्यामीन जनजाति का एक शहर है। और फिर उसके परिणामस्वरूप, इस्राएली, शेष इस्राएली बिन्यामीन के गोत्र के विरुद्ध आए, और यह एक बड़ा गृह युद्ध है। बहुत सारे लोग मारे जाते हैं।

परन्तु इसकी शुरूआत दूसरे लेवी से होती है। अध्याय 17 एक लेवी से शुरू होता है, एप्रैम से मीका नाम के एक आदमी के साथ, लेकिन वह एक युवा लेवी को काम पर रखता है। अध्याय 17, श्लोक 7 में, यहूदा के बेतलेहेम का यहूदा के परिवार का एक जवान आदमी जो लेवी था और वह परदेशी रहता है और वह एप्रैम की भूमि पर जाने के लिए बेतलेहेम छोड़ देता है।

अध्याय 19, पद 1, लेवी से शुरू होता है। पहली बात जिस पर हम दोबारा ध्यान देंगे, हमें फिर से बताया गया है कि उन दिनों इज़राइल में कोई राजा नहीं था। वास्तविक ईश्वरीय नेतृत्व की कमी के कारण चीज़ें इस खराब स्थिति तक पहुँच रही हैं।

19, पद 1 आगे कहता है, एक लेवी एप्रैम के पहाड़ी देश के सुदूर भाग में परदेशी होकर रह रहा था, जिस ने यहूदा के बेतलेहेम से एक सुरैतिन अपने पास रख ली। बहुत दिलचस्प है, 17 में हमारे पास यहूदा से एक लेवी एप्रैम जा रहा है। यहाँ 19 में, हमारे पास एप्रैम का एक लेवी है जो बेतलेहेम जा रहा है ताकि वहाँ से एक पत्नी, उपपत्नी ले सके।

और तुरंत हमें बताया गया कि वह उसके प्रति बेवफा है और उसे छोड़कर बेथलेहेम में अपने परिवार के घर वापस चली जाती है। और इससे घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू हो जाती है जो

अंततः किताब के बाकी हिस्से में होने वाली वास्तव में बुरी चीजों में तब्दील हो जाती है। इसलिए, श्लोक 3, अध्याय 19 में, उसका पति उठा और उससे प्यार से बात करने के लिए उसके पीछे गया और वह युवती के घर पहुंचा और उसके पिता ने उसका स्वागत किया।

और फिर यह एक लंबे प्रकार का दोहराव चक्र है जहां वह रात भर रुकता है, फिर छोड़ना चाहता है, और उसके पिता लंबे समय तक और लंबे समय तक रहने के लिए उसके साथ जुड़ते हैं और वह मूल रूप से लगभग एक सप्ताह तक रुकता है। और आप कभी नहीं जानते, यहां वास्तव में युवती का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन पिता को लेवी को इतना पसंद करना चाहिए कि वह चाहता है कि वह लंबे समय तक रहे और शायद इस दौरान वह बेटी को उसके पति के साथ वापस जाने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन आखिरकार, अंत में, लेवी ने फैसला किया कि उसके लिए बहुत कुछ हो चुका है और वह वास्तव में जाने वाला है।

और इसलिए, श्लोक 10 में यह कहा गया है कि वह रात नहीं बिताएंगे। वह उठा, और चला गया, और यबूस के साम्हने अर्थात् यरूशलेम पहुंचा। तो, यरूशलेम ठीक यहीं है, पश्चिम में थोड़ा दूर।

और यह कहता है, कि उसके पास काठी बँधे हुए दो गधे थे, और उसकी सुरैतिन भी उसके साथ थी। और इस बिंदु पर यरूशलेम की स्थिति के बारे में एक दिलचस्प छोटी अंतर्दृष्टि है क्योंकि हमने अगले कुछ छंदों में उसे नौकरों के साथ देखा है और जैसे ही वे यबूस के पास पहुंचते हैं, पद 11 में, नौकर कहता है, चलो यहां शहर में रुकें जेबुसाइट्स. और स्वामी, लेवी कहता है, नहीं, हम पीछे नहीं हटेंगे, पद 12, हम परदेशियों के नगर में नहीं जा रहे हैं जो इस्राएल के लोगों के नहीं हैं।

हमने पहले उल्लेख किया है कि यरूशलेम, यबूस, यहूदा और बिन्यामीन की सीमा पर था, दक्षिण में यहूदा, उत्तर में बिन्यामीन। अध्याय 15, श्लोक 63 में, यह कहा गया है कि यहूदी लोग यबूसियों को अपने क्षेत्र से बाहर निकालने में सक्षम नहीं थे। और न्यायियों अध्याय 1, श्लोक 21 में कहा गया है कि बिन्यामीनवासी वही काम करने में सक्षम नहीं थे।

इसलिए, उन दोनों का शहर पर किसी न किसी तरह का दावा था। लेकिन यहां हम देखते हैं कि एक तरह से यह एक तटस्थ मैदान था और यह वास्तव में किसी एक का नहीं था। और ऐसा प्रतीत होता है कि यबूसी अभी भी वहां अपनी संप्रभुता बनाए हुए हैं।

और इसलिए यहाँ हमारे पास एक लेवी और उसका नौकर है। और लेवी उस नगर में रहना नहीं चाहता, क्योंकि वह उसे पराया नगर समझता है। और फिर, वर्षों बाद ऐसा नहीं हुआ कि डेविड ने शहर पर कब्जा कर लिया और इसे अपना बना लिया, इसे एक यहूदी शहर, एक इज़राइली शहर, देश की राजधानी बना दिया।

अतः वे गिबा की ओर आगे बढ़ते हैं। गिबा यरूशलेम से लगभग चार मील पश्चिम में है। यह बिन्यामीन के क्षेत्र में है।

और वे वहीं रहने वाले हैं। तो, वे वहां पहुंच जाते हैं। वे वहीं दूसरी ओर मुड़ जाते हैं।

और वह चौक में चला जाता है क्योंकि कोई भी उनका स्वागत नहीं करता है। श्लोक 16 से 21 हमें एक बूढ़े व्यक्ति के आतिथ्य के बारे में बताते हैं जो उसे वहां मिलता है। और बूढ़ा आदमी, जैसे-जैसे वे आगे-पीछे जाते हैं, अंततः उसे अपने घर में आमंत्रित करता है।

और इसी तरह यह खंड समाप्त होता है। और वहां वे रात में बस गए हैं। और बूढ़ा लेवी को अपने घर में ले आया।

और उन्होंने पद 21 के अन्त में अपने पांव धोए, खाया पिया। तो, वे इस समय के दौरान मौज-मस्ती कर रहे हैं, पद 22। और फिर शहर के लोग, गिबा के लोग, और यह उन्हें बेकार आदमी कहता है।

हमने यह शब्द कुछ अन्य बार देखा है। अबीमेलक निकम्मा मनुष्य है, और शिमशोन निकम्मे मनुष्यों की संगति करता है। अन्य न्यायाधीशों में से एक वास्तव में बेकार साथियों से जुड़ा हुआ है।

तो, हम देखते हैं कि जाहिर तौर पर इसका अंत अच्छा नहीं होने वाला है। और पद 22 में वे इस बूढ़े से क्या कहते हैं, उस मनुष्य को जो तेरे घर में आया था, बाहर ले आ, कि हम उसे पहचानें। अब, पुराने नियम में, जानने के लिए शब्द का उपयोग कई अलग-अलग तरीकों से किया गया है।

इसका संबंध संज्ञानात्मक मान्यता से है। इसका संबंध रिश्ते और ईश्वर को जानने से है। इसका संबंध यौन मिलन से भी है।

आदम अपनी पत्नी को जानता था, और वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तो वह वहाँ है। यहां इसका वास्तव में क्या मतलब है, इस पर बहुत बहस हुई।

और मैं यहां यह भी कहना चाहता हूँ, यह अंश, उत्पत्ति 19 के इस अंश में बहुत मजबूत गूँज है, जहां आपके पास लूत और शहर के लोग लूत में आते हैं और उन दो व्यक्तियों को जानने की मांग करते हैं जिन्हें वह मेहमान के रूप में बुलाता है। , और इसके बदले लूत ने अपनी बेटियाँ इन लोगों को अर्पित कर दीं। यहाँ भी वही परिदृश्य चल रहा है, और वह आदमी, जो घर का मालिक है, बाहर जाता है और कहता है, नहीं, इतनी दुष्टता मत करो। जब से यह आदमी मेरे घर आया है, तो यह नीच काम न करो।

देख, मेरी कुँवारी बेटा और उसकी रखेल यहाँ हैं। अब, मेरे यहाँ रुकने का कारण यह है कि, हाल के दशकों में, बाइबिल के विद्वानों और अन्य लोगों के बीच इस बात पर बहुत बहस हुई है कि क्या यह अनुच्छेद और उत्पत्ति का अनुच्छेद वास्तव में समलैंगिक गतिविधि के बारे में बात कर रहे हैं या नहीं। और उत्पत्ति 19 में सदोम में इसकी कड़ी निंदा की गई प्रतीत होती है।

इसकी यहां कड़ी निंदा होती नजर आ रही है। परंपरागत रूप से, यह सोचा गया है कि यह समलैंगिक गतिविधि के युग को समाप्त करने की इच्छा रही है। लेकिन हाल के दशकों में ऐसे अन्य व्याख्याकार भी हुए हैं जिन्होंने 'नहीं' का सुझाव दिया है, या जिन्होंने 'नहीं' का तर्क दिया है।

यह बिल्कुल भी समलैंगिक गतिविधि नहीं है. यह उन लोगों को बाहर लाने का अनुरोध है ताकि हम जान सकें कि वे अधिक न्यायसंगत हैं और हम उनका स्वागत कर सकते हैं। हम पड़ोस की स्वागत समिति हैं।

हम सिर्फ यह जानना चाहते हैं कि वे कौन हैं और उन्हें जानना चाहते हैं। मुझे लगता है कि यह इस तथ्य से गलत है कि लूट की प्रतिक्रिया और इस आदमी की प्रतिक्रिया दोनों युवा महिलाओं को उनके सामने पेश कर रहे हैं। इस परिच्छेद में यह भी कहा गया है, इतनी दुष्टता मत करो, और यह नीच काम मत करो।

यदि वे सिर्फ यह जानना चाहते थे कि ये लोग कौन थे, तो यह कोई बुरी बात नहीं है, यह कोई बुरी बात नहीं है। अन्य, तो यह एक तर्क था जो किसी बिंदु पर दिया गया था। जो प्रतिक्रिया मैंने अभी दी वह सामान्यतः दी जा चुकी है।

तर्क थोड़ा बदल गया है, और अब समलैंगिक संबंधों की वैधता के समर्थक कहेंगे, नहीं, मुद्दा समलैंगिक गतिविधि का तथ्य नहीं है, बल्कि स्वच्छंद समलैंगिक गतिविधि है और यह समलैंगिक बलात्कार है। वह बहस जारी है. यह धर्मग्रंथ के अन्य भागों से भी जुड़ा हुआ है जो समलैंगिकता के बारे में बात करते हैं, विशेष रूप से रोमन 1 में पॉल। मैं निश्चित रूप से यहां कहूंगा, कि गतिविधि को स्वयं एक घृणित चीज़ के रूप में देखा जाता है, और आदमी इसे पहचानता है, और हम इससे बच नहीं सकते हैं वह तथ्य.

वह अपमानजनक तरीके से अपनी कुंवारी बेटी और उस आदमी की उपपत्नी की पेशकश करता है, इसलिए वह कहता है, उनका उल्लंघन करो, उनके साथ जो चाहो करो, उनके साथ अपने तरीके से रहो, लेकिन इस आदमी के खिलाफ ऐसा मत करो जो है मेरे मेहमान। वे लोग इससे खुश नहीं थे, इसलिए घर का मालिक, ठीक है, उस आदमी का कहना है, यह स्पष्ट नहीं है कि कौन, लेकिन ऐसा लगता है कि लेवी उसकी उपपत्नी को पकड़ लेता है और उसे उनके पास ले जाता है, और वे उसे जानते थे और उसके साथ दुर्व्यवहार करते थे पूरी रात से सुबह तक. सुबह जब मालिक बाहर आता है तो वह दरवाजे पर गिर पड़ती है।

असल में, वह वहां मृत पड़ी है। यह लेवी इस अनुच्छेद में अपने आप को महिमा से नहीं ढक रहा है, क्योंकि वह काफी निर्दयी है। वह पद 28 में बस यही कहता है, उठो, चलो।

उसके स्पष्ट संकट की कोई चिंता नहीं। वह वास्तव में नहीं जानता होगा कि वह मर चुकी है, लेकिन वह निश्चित रूप से उसके बारे में चिंतित नहीं है। कोई उत्तर नहीं मिला, इसलिए वह उसे गधे पर बिठाता है, और उठकर चला जाता है।

जब वह घर पहुँचता है, तो चाकू लेता है, उसे 12 टुकड़ों में काट देता है, और टुकड़ों को 12 जनजातियों को एकजुट करने के लिए डाक से भेज देता है। लेकिन इस उपपत्नी के साथ ऐसा करने की उसकी वीभत्सता, जिसे वह स्पष्ट रूप से अध्याय 19 के आरंभिक भाग में कथित तौर पर जिस महिला से प्यार करता था, यहाँ बहुत ही संवेदनहीन है। उन्होंने उसके प्रति अपनी चिंता पर कोई ध्यान केंद्रित नहीं किया है और अब इसे एक राष्ट्रीय मुद्दा बना रहे हैं।

बेंजामिन जनजाति के साथ अन्य 11 जनजातियों के बीच टकराव में बदल जाता है। यह आदमी उस हद तक बढ़ गया है। अध्याय 20, यही अध्याय 20 की संपूर्ण विषयवस्तु है।

इजराइल अब एक बहुत ही विनाशकारी गृहयुद्ध में घिर गया है। मैंने पहले उल्लेख किया था कि अध्याय 2-16 इसराइल के बाहरी, अपने से बाहर के दुश्मनों के साथ संघर्ष से संबंधित है। अध्याय 17-21 आंतरिक संघर्षों और आत्म-विनाशकारी संघर्षों के बारे में हैं, और निश्चित रूप से, हम इसे यहाँ अध्याय 20 में देखते हैं।

यह बस चीजों का एक भयानक, भयानक क्रम है। इसलिए वे एक साथ इकट्ठे होते हैं, अध्याय 20, श्लोक 1 और उसके बाद। और दान से लेकर बेशेबा तक हर कोई आता है।

दान सुदूर उत्तर में है, और बेशेबा सुदूर दक्षिण में है। वे मिज़पाह में एक जगह इकट्ठा होते हैं, जो देश के मध्य भाग में है। और सभी लोगों के प्रमुख, गोत्र जो स्वयं को प्रभु के सामने प्रस्तुत करते हैं, उनकी संख्या 400,000 है।

वे पुरुष जिन्होंने तलवार खींची। और जाहिरा तौर पर बिन्यामीनियों को आमंत्रित नहीं किया गया है, क्योंकि आयत 5 कहती है कि उन्होंने इसके बारे में सुना है। और इस्राएल के लोग पूछते हैं, यह कैसे हुआ? और इसलिए, लेवी श्लोक 4 और उसके बाद की कहानी बताता है।

और इस प्रकार सभी लोग उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए। श्लोक 7 में लेवी कहता है, इस आक्रोश के कारण, मैं चाहता हूँ कि हर कोई मेरा समर्थन करे और मुझे अपनी सलाह दे। और हर कोई हथियार उठा लेता है।

श्लोक 8 और उसके बाद में कहा गया है, हममें से कोई भी अपने घर नहीं जाएगा, हममें से कोई भी अपने घर नहीं लौटेगा, लेकिन जब तक हम इस आक्रोश का ध्यान नहीं रखते। और इसलिथे उन्होंने बिन्यामीन के गोत्र में पुरुष भेजे, और वे पहिले यह कहने लगे, कि तू ने क्या किया है? और पहला अनुरोध तो यही है कि अपराधियों को हमारे पास भेज दो। उन निकम्मे लोगों को हमारे पास भेजो जिन्होंने अत्याचार किया, और शायद यही होगा।

परन्तु पद 13 के अंत में, बिन्यामीनियों ने उसकी बात नहीं सुनी। और इस प्रकार यह अगले स्तर तक बढ़ता जाता है। और इसलिए बिन्यामीन के लोग, पद 14 और उसके बाद युद्ध में शामिल होने के लिए बाहर आए।

यहां बहुत सारे लोग शामिल हैं। श्लोक 15 में बिन्यामीनियों की संख्या 26,000 है। ऐसा प्रतीत होता है कि शेष इज़राइल की संख्या 400,000 है।

और गिबा के नागरिकों के पास स्वयं 700 कुलीन पुरुष थे, श्लोक 15 के अंत में। श्लोक 16, उनमें से 700 चुने हुए पुरुष थे जो बाएं हाथ के थे, जो गोफन फेंक सकते थे। और यह एक फायदा होगा, क्योंकि आम तौर पर लड़ाई में, आप दाएं हाथ से काम करने के आदी हो जाते हैं।

पत्थर एक निश्चित कोण, प्रक्षेपवक्र से, दाहिने हाथ के स्लिंगरों से आ रहा है। इसलिए, यदि आपके पास बाएं हाथ के स्लिंगर्स हैं, तो यह एक फायदा था। यह और भी अधिक आश्चर्य की बात होगी।

शायद टेनिस की तरह, जहां अधिकांश खिलाड़ी दाएं हाथ के होते हैं, और यदि आपके पास बाएं हाथ का खिलाड़ी है, तो यह प्रतिद्वंद्वी को परास्त कर देता है। और इस्राएल के पुरुष, श्लोक 17 फिर से दोहराया गया, 400,000 पुरुष। और इसलिये इस्राएली जाकर परमेश्वर से पूछने लगे, कि हमारी ओर से बिन्यामीनियोंके विरुद्ध पहिले कौन चढ़ाई करेगा? और उत्तर फिर से, याद रखें कि अध्याय 1 में पहले ही कहा गया है, हमारे लिए सबसे पहले कौन जाएगा? और परमेश्वर कहता है, यहूदा।

श्लोक 18 में भी यही बात है, यह यहूदा है। इसलिये वे बिहान को उठे, और गिबा के साम्हने डेरे खड़े किए। और अब हमलों और जवाबी कार्रवाई और बार-बार हमलों का सिलसिला जारी है।

और यह अगले कुछ पैराग्राफों में तीन बार होता है। और इस बिंदु पर चीजें बद से बदतर होती दिख रही हैं। पहले दो बार, बिन्यामीन बाकी इस्राएलियों को पीछे हटाने में सक्षम है।

तीसरी बार, उन्हें रूट कर दिया गया। और उन्हें वास्तविक पूर्ण विनाश का सामना करना पड़ा जो कि होना था। यह कनानी लोगों का भाग था।

इसके मध्य में, हमारे पास श्लोक 28 में पीनहास का संदर्भ है। उससे ठीक पहले, पद 26 में बेतेल का उल्लेख है। यहीं पर सेना भूमि के मध्य में आई थी।

और श्लोक 27 के अंत में कोष्ठक, यह वह जगह है जहां भगवान की वाचा का सन्दूक था। तो, परमेश्वर की उपस्थिति यहाँ बेथेल में थी। और इसमें उल्लेख है कि पीनहास, एलीएजेर का पुत्र, और हारून का पोता, उन दिनों सन्दूक के साम्हने सेवा टहल करता था।

तो यह भी एक और छोटा सा संकेतक है कि शायद यहां घटनाएं अवधि के अंत में नहीं, बल्कि पहले हो रही हैं। क्योंकि पीनहास हारून का पुत्र था जो सैकड़ों वर्ष पहले जीवित था। और इसलिए, पहले अध्याय 18 में मूसा के पोते के बारे में संकेतक के साथ, दोनों संकेतक हैं कि ये अंतिम अध्याय पहले की अवधि में हो रहे होंगे।

लेकिन उन्हें यहां सिर्फ यह दिखाने के लिए रखा गया है कि इस बिंदु तक सब कुछ कितनी गहराई तक डूब चुका है। वह प्रभु से पूछता है, और प्रभु श्लोक 28 में उत्तर देते हुए कहते हैं, कल के लिए जाओ, और मैं उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दूंगा। इसलिए वे घात लगाते हैं, और वे अंदर चले जाते हैं, और अंततः, वे उन्हें हराने में सक्षम होते हैं।

क्षमा करें, मैं श्लोकों की संख्या ठीक से नहीं देख पा रहा हूँ। पद 35 कहता है, यहोवा ने इस्राएल से पहले बिन्यामीन को हरा दिया। उस दिन इस्राएल के पुरुषों ने बिन्यामीन के पच्चीस हजार एक सौ पुरुषोंको नाश किया।

इसलिए, इतनी कम गहराई में जाने के बावजूद कि हर कोई डूब गया था, हम अभी भी इज़राइल की ओर से भगवान को बेंजामिन के खिलाफ लड़ते हुए देखते हैं। और मुझे लगता है कि शायद विचार यह है कि देश में जो भी समस्याएं हो रही हैं, उनके आक्रोश का सामना करने के लिए राष्ट्र एक साथ इकट्ठा हुआ है। शायद उसी तरह जैसे जोशुआ की किताब के अध्याय 22 में, जब जॉर्डन के पूर्व में बसने वाले जनजातियों ने एक वेदी बनाई थी, तो बाकी राष्ट्र यह सोचकर एकजुट हो गए कि यह एक अपमान है क्योंकि यह झूठी पूजा की वेदी है।

और वे, अपने श्रेय के लिए, युद्ध में जाकर इस सिद्धांत की रक्षा करने के लिए तैयार हैं कि कोई झूठी पूजा नहीं होनी चाहिए। फिर वह स्थिति फैल गई क्योंकि यह पता चला कि जॉर्डन के पूर्व की जनजातियाँ झूठी वेदी स्थापित नहीं कर रही थीं। तो, यहां एक आशा की किरण, प्रकाश की एक किरण यह हो सकती है कि यहां जितनी बुरी चीजें हो रही हैं, 11 जनजातियां इस आक्रोश के खिलाफ एकजुट हैं, और भगवान इसलिए उन्हें दे रहे हैं, जिससे वे यहां बिन्यामीनियों के खिलाफ प्रबल हो सकें।

तो, पद 36, बिन्यामीन के लोगों ने देखा कि वे हार गए हैं। लेकिन आगे-पीछे, आगे-पीछे होता रहता है, और बहुत से लोग गिरते हैं। पद 44, बिन्यामीन के 18,000 पुरुष मारे गए, वे सब शूरवीर थे।

श्लोक 45 में 2,000 और लोग शामिल हैं। उस दिन मरने वाले सभी लोग 25,000 पुरुष हैं, जो श्लोक 35 के 25,100 के अतिरिक्त प्रतीत होते हैं। इसलिए उस समय बहुत अधिक वध होता है।

और फिर, वह चिंगारी, वह ट्रिगर जिसने इस पूरे राष्ट्रव्यापी नरसंहार को लगभग शुरू कर दिया, वह लगभग एक आदमी का स्वार्थ है, इस बेन्जामिन का, मुझे क्षमा करें, इस लेवी का, और उस आदमी का स्वार्थ है जो अपने घर को बेकार साथियों के आने के लिए खोलता है। और उपपत्नी का बलात्कार करो, और यह लेवी जिसे वास्तव में परवाह नहीं है कि उसकी पत्नी के साथ क्या होगा। तो यह, फिर से, चीजों का स्नोबॉलिंग प्रभाव है। और इस प्रकार, इसका अंत यह होता है कि बेन्जामिन जनजाति लगभग नष्ट हो जाती है।

अध्याय के अंतिम श्लोक, श्लोक 48 में, इस्राएल के लोग बिन्यामीन के लोगों के विरुद्ध लौट आए, और उन्हें तलवार की धार से मार डाला, शहर, आदमी, जानवर, और जो कुछ भी उन्हें मिला, और सभी को जो नगर उन्हें मिले, उन्होंने उन्हें आग लगा दी। तो विडम्बना यह है कि यहोशू की किताब में इज़राइल को कनानियों के खिलाफ जो करना था, वह अब वे अपने ही हमवतन, अपने ही भाइयों के भीतर कर रहे हैं, और उन्हें मिटा रहे हैं और सभी को आग में जला रहे हैं। तो बात यह है कि यह अध्याय 20 के अंत में यहाँ आया है।

तो, हमारे पास एक अंतिम अध्याय है। और यह एक तरह की विडम्बना है क्योंकि इस सब के बाद, इज़राइलियों को एहसास होता है और वे खुद से पूछते हैं, हम्म, हमने क्या किया है? हमने अपने एक भाई की जाति को मिटा दिया है। शायद यह इतना अच्छा विचार नहीं है।

शायद हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था. और यह अध्याय 21 के पहले पैराग्राफ, श्लोक 1 से 7 का विषय है। और श्लोक 6 में, यह कहा गया है कि इस्राएल के लोगों को अपने भाई बिन्यामीन पर दया आई। इसमें कहा गया है, एक जनजाति इसराइल से अलग हो गई है.

तो हम क्या करने जा रहे हैं? जो बचे हैं उनकी पत्नियों के लिए हम क्या करेंगे? चूँकि हमने प्रभु की शपथ ली है कि हम उन्हें अपनी पत्नियाँ, अपनी बेटियाँ नहीं देंगे, किसी और को बिन्यामीन के गोत्र के कायाकल्प में योगदान करने दें। हम ऐसा नहीं करने जा रहे हैं. तो, यह दुविधा आगे-पीछे है, और लोग स्वयं एक तरह से असंगत हैं।

तो, उन्होंने यह कहने का फैसला किया, अच्छा, वह कौन था जो नहीं आया और बाकी सभी के साथ एकजुट नहीं हुआ? और उन्हें एहसास हुआ, किसी ने बताया, कि याबेश गिलाद नामक स्थान के निवासी, जो जॉर्डन के पूर्व में है, वहाँ नहीं थे। तो, वे वही हैं जिन्हें बेंजामिन को पत्नियों का योगदान देने का सम्मान पाने के लिए चुना गया है। मेरा इरादा मुद्दे को तुच्छ बनाने का नहीं है, लेकिन कभी-कभी यह आपको याद दिलाता है कि व्यवसायों या संकायों में समितियाँ कैसे बनती हैं जहाँ हम निर्णय लेते हैं कि हम एक उपसमिति या किसी ऐसे व्यक्ति का अध्यक्ष बनाने जा रहे हैं जो उस व्यक्ति से है जो बैठक में नहीं था। को अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है या जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं।

और यहाँ हमारे पास यह चल रहा है। इसलिए, पद 10 में राष्ट्र ने अपने सबसे बहादुर लोगों में से 12,000 को भेजा, और याबेश गिलाद के निवासियों पर तलवार से हमला किया, उनकी महिलाओं को ले लिया, और सभी को विनाश के लिए समर्पित कर दिया, लेकिन 400 युवा कुंवारियों को ढूँढा जो किसी पुरुष को नहीं जानती थीं और उन्हें ले आए। तो उन्होंने यही किया.

पद 12, सारी मण्डली इकट्ठी होती है, और बिन्यामीनी वहाँ लौट आते हैं। इसलिए, उन्होंने उसे ये 400 स्त्रियाँ दीं, लेकिन वे बिन्यामीनियों के लिए पर्याप्त नहीं थीं। फिर, पद 15 में, लोगों को बिन्यामीन पर दया आई क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रों में सेंध लगाई थी।

तो, यहाँ सभी आगे-पीछे के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि इस वजह से, भगवान ने उनके बीच इस दरार को खोल दिया है, और इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि उन्हें एक दूसरे कदम की आवश्यकता है, बेंजामिन के लिए पत्नियों को खोजने का दूसरा चरण। याबेश गिलियड में सभी को नष्ट करना और 400 युवतियों को चुरा लेना पर्याप्त नहीं था। तो, वे श्लोक 16 में फिर से कहते हैं, हम पत्नियों के लिए क्या करने जा रहे हैं क्योंकि बिन्यामीन की स्त्रियाँ नष्ट हो गई हैं?

कुछ विरासत की आवश्यकता है, लेकिन हम उन्हें अपनी पत्नियाँ नहीं दे सकते, पद 18। और इसलिए, उन्होंने कहा, ठीक है, चलो शीलो चलें। वहाँ एक वार्षिक उत्सव है, और महिलाएँ फसल उत्सव के अवसर पर नृत्य करने जा रही हैं, और आइए घात लगाकर हमला करें और अन्य 200 लोगों का अपहरण कर लें।

और इसलिए मूलतः वही होता है जो घटित होता है। और उन्होंने बिन्यामीनियों से कहा कि वे ऐसा कर सकते हैं, इसलिए उन्होंने वैसा किया, पद 23. और बिन्यामीन के लोगों ने वैसा ही किया, और जो नर्तकियां उन्होंने उठाईं, उन में से अपनी गिनती के अनुसार पत्नियां ब्याह लीं।

तब वे जाकर अपने निज भाग को लौट गए, और जो नगर उन में रहते थे उनको फिर बसाया, और बस गए। इसलिए, इस अध्याय का अंत काफी शांतिपूर्ण लगता है, और जैसा कि हर कोई हमेशा के लिए खुशी से रह रहा है, श्लोक 24, इसराइल के लोग उस समय वहां से चले गए, प्रत्येक व्यक्ति अपनी जनजाति और परिवार में चला गया। और वे वहां से अपने अपने निज भाग को चले गए।

यह बिल्कुल जोशुआ की किताब के अंत जैसा लगता है। हर कोई अपने ही स्थान पर बस जाता है, और अपनी ही विरासत में लौट जाता है। सब कुछ यथास्थान है।

और यहोशू में यह सब अच्छा था, लेकिन यहां यह थोड़ा भ्रामक है क्योंकि यह एक बड़ी कीमत पर आता है और हजारों की बड़ी लागत पर आता है, यदि हजारों नहीं तो हजारों लोग मारे गए और विस्थापित हुए, परिवार टूट गए, और युवा महिलाओं का उल्लंघन हुआ। और इसलिए, पुस्तक का लेखक इस पर अपनी अंतिम राय देकर और कहता है, नहीं, यह अच्छी बात नहीं है। उस समय कोई राजा नहीं था।

हर कोई इसे अपनी नज़र में सही कर रहा है। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि वे वही कर रहे हैं जो वे करना चाहते थे। देश में कोई ईश्वरीय नेतृत्व नहीं है जो कह रहा हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

यहाँ हमें क्या करना चाहिए। और यदि कोई धर्मात्मा राजा होता जो उन्हें प्रभु का अनुसरण करने और कानून में निहित होने में नेतृत्व करता, तो मेरा विचार है कि ऐसा लगभग कुछ भी नहीं हुआ होता। हां, स्पष्ट रूप से, सभी ने पाप किया है और भगवान की महिमा से रहित हो गए हैं, और पूरे देश में पाप हुआ होगा, लेकिन निश्चित रूप से बड़े पैमाने पर पाप और बड़े पैमाने पर धर्मत्याग और समग्र रूप से राष्ट्र का पतन नहीं हुआ है, नेताओं सहित, कि यदि कोई धर्मात्मा राजा होता तो ऐसा होता।

इसलिए, जैसा कि हम न्यायाधीशों की पुस्तक को समाप्त करते हैं, बस दोहराने के लिए, मुख्य विषय यह है कि प्रभु को त्यागने का आध्यात्मिक धर्मत्याग हर समय बदतर और बदतर होता जा रहा है, और संकेत, नोट बजाया जा रहा है, कि बेहतर चीजें आने वाली हैं, या चीजें बेहतर होतीं, अगर कोई धर्मात्मा राजा होता। जैसे-जैसे हम रूथ और फिर शमूएल की पुस्तक के माध्यम से धर्मग्रंथ को पढ़ना जारी रखते हैं, हमें एहसास होता है कि आगे बेहतर दिन होंगे जब आप डेविड और सोलोमन जैसे राजाओं और कुछ धर्मात्मा राजाओं के अधीन हो जाएंगे। तो यह न्यायाधीशों की पुस्तक का संदेश है।

यह बाइबिल की सबसे दुखद किताबों में से एक है, लेकिन यह हमारे लिए बहुत शिक्षाप्रद भी है।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 30, न्यायाधीश 19-21, दूसरा परिशिष्ट, बेंजामिनाइट आक्रोश है।